Dr.Raman Kumar Thakur

Assistant professor (Guest) Department of Economics D.B. College Jaynagar, Madhubani. Class:-B.A. Part-2(Gen.& Subsidiary.)

Date:-25-09-2020.

Lecture n.-29.

TOPIC:- नवीन कृषि रणनीतियाँ : हरित क्रांति एवं कृषि यंत्रीकरण(New Agricultural Strategies: Green Revolution and agriculture Mechnisation).

→ भारत में कृषि की नवीन रणनीति अपनाकर हरित क्रांति को लाया गया था. भारत के संदर्भ में हरित क्रांति का तात्पर्य छठे दशक के मध्य में कृषि उत्पादन में उस तीव्र वृद्धि से है जो ऊंची उपज वाले बीजों(High yielding Varieties or Seeds) एवं रासायनिक खादों व नई तकनीक के प्रयोग के फलस्वरूप हुई है।

दूसरे,शब्दों में हम कह सकते हैं कि "हरित क्रांति से अभिप्राय कृषि उत्पादन में होने वाली उस भारी वृद्धि

से है जो कृषि की नई नीति अपनाने के कारण हुई है ।"

भारत में सर्वप्रथम 1960-61 में एक कार्यक्रम 'गहन कृषि जिला कार्यक्रम '(Intensive Agricultural District Programme, IADP)के नाम से देश के सात चुने हुए जिलों में अपनाया गया. इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को ऋण, बीज ,खाद, औजार आदि उपलब्ध कराना एवं केंद्रित प्रयासों द्वारा दूसरे क्षेत्रों के लिए गहन खेती का ढांचा तैयार करना था.

* हरित क्रांति के प्रमुख तत्व(Main Elements of Green Revolution):- भारत में हरित क्रांति के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं. जिसे इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

1) अधिक उत्पादन देने वाले बीजों का प्रयोग।

2) कृषि विकास हेतु विभिन्न संस्थाओं की स्थापना।

3) पौध संरक्षण।

4) सिंचाई का विस्तार।

5) रसायनिक खादों का अधिक उपयोग।

6) बहू-फसली कार्यक्रम को प्रोत्साहन।

7) यंत्रीकरण को बढ़ावा।

8) कृषि भूमि का विकास।

9) भूमि परीक्षण।

उपर्युक्त बातों को पूरी तरह से स्पष्ट करने के बाद अब हम 'हरित क्रांति ' के आर्थिक प्रभाव को विस्तार पूर्वक वर्णन कर रहे हैं जो इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:-

A) कृषि उत्पादन में वृद्धि(Increase in Agriculture production) :-भारत में गेहूं चावल, ज्वार ,बाजरा की फसलों के लिए अधिक उपज देने वाली किस्मों के प्रसार से 1965 -66 के बाद इनका उत्पादन तेजी से बढ़ा है . नई कृषि नीति के परिणाम- स्वरूप यद्यपि विभिन्न फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई है .परंतु सबसे अधिक वृद्धि गेहूं के उत्पादन में हुई है . इसलिए प्रायः कहा जाता है कि हरित क्रांति वास्तव में 'गेहूं की क्रांति' है.

B) कृषि बचतो में वृद्धि(Increase in Agricultural Surpluses):- हरित क्रांति के कारण उत्पादन में वृद्धि हुई है जिससे शिक्षकों की वस्तु की मात्रा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है इससे कृषि अतिरेक को देश के विकास के लिए काम में लाया जा सकता है।

C) रोजगार में वृद्धि हरित क्रांति में बहु -फसली कार्यक्रम अपनाए जाने से उत्पादन की मात्रा में वृद्धि के परिणाम स्वरूप परिवहन ,बिक्री तथा विपणन आदि की सेवाओं की मांग में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है !जिसके परिणाम स्वरूप रोजगार के अवसरों में भारी वृद्धि हुई है।

D) आर्थिक विकास का आधार कृषि उत्पादन में होने वाली वृद्धि से भारत जैसे कृषि- प्रधान देश के आर्थिक विकास ,स्थिरता और आत्मनिर्भरता के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता मिली है।